वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

सितम्बर – 2023

- भगवान् देवात्मा की देव वाणी
- अज्ञात अन्धेरे
- मनुष्य जीवन की सफलता आत्म कल्याण में है।
- त्याग ब्रत
- नीच अनुराग और नीच घृणा मूलक महा विनाशकारी नीच गतियां और उनके महा भयानक फल
- मनुष्य आत्मा के आत्मिक पतन का सत्य ज्ञान और सत्य बोध
- अपने आपका ज्ञान – 2
- शुभ संग्राम

भगवान् देवात्मा की अमुल्य देव वाणी

★ अगर देव प्रभावों की खुराक नहीं मिलेगी तो उच्च भाव मर जाएगा। वर्षों के वर्ष गुजर जाते हैं एक-एक आत्मा को देव प्रभावों के द्वारा feeding नहीं होती, इसलिए आत्मा भूखा मर जाता है।

★ अगर तुम खुद नीच गतियों से नहीं बचते, तो तुम किसी और को नीच गतियों से नहीं बचा सकते। डींग मार सकते हो। कोई भी वासना या नीच शक्ति जो तुम्हें बुराई की ओर ले जाती है यदि तुम उसके साथी बनते हो तो तुम पाप के आशिक हो। आवश्यकता है कि तुम्हारा धर्म जगत में जन्म हो।

★ तुम्हारे आत्मा में यदि कोई बुरी चिंता गुजर रही है, वह तुम्हारी आत्मा का नाश कर रही है। उसको कठोर बना रही है, उसको विकार से भर रही है। जितना यह बोध जागृत और विकसित होगा उतनी ही तुम्हारी नीच गतियां तुम्हारे सम्मुख आएंगी। तुम हमारी ज्योति और बल को पाकर उनसे निकलने के योग्य बनोगे। आत्मिक विकार से शुद्धि लाभ करने की प्रत्येक आत्मा को ज़रूरत है।

★ मनुष्य को यह नज़र आवे कि नीच गतियां जो उसके भीतर से निकलती हैं, वह देवात्मा के देव रूप को उस की आंखों से लोप कर देती हैं और धीरे धीरे वह देवात्मा के देव रूप को देखने के अयोग्य हो जाता है और आत्मा धीरे धीरे अपने व्यक्तिगत अस्तित्त्व के विचार से ही मिट जाता है, क्योंकि उनके भीतर ऐसी शक्तियां होती हैं जो शुभ की उत्पत्ति नहीं होने देतीं। जो आत्मा नीच गतियों के अधीन है और उच्च गतियों से शून्य है, जल्दी या देर में उसका नष्ट हो जाना लाज़मी है। नेचर का यह नियम अटल है।

★ एक एक मनुष्य अपनी नीच गति से स्वयं तो नीच बनता ही है, परन्तु उसका फल और भी आगे फैलता है। उसने जो नीच गति की, उस का असर विश्व में फैल गया। जब जहां-जहां कोई अस्तित्त्व उस असर को ग्रहण करने की हालत में है, वह उसको ग्रहण कर लेगा। यह पाप उस व्यक्ति ने कर दिया। इससे दुनिया का कितना नुकसान करता है, जैसे परमाणु बम्ब के असर फैलते हैं, वैसे ही नीच गति के असर फैलते हैं।

★ रात को सोने से पहले देव स्तोत्र और देव आरती का गान करना बहुत मुफीद है।

★ क्या तुम दुनिया के पीछे अपना सब कुछ (मुख्य और सार आत्मा) लुटा दोगे? श्रीमान देव रत्न जी बहुत होशियार आदमी थे, लेकिन उन्होंने एक स्त्री का गुलाम बन कर सब कुछ लुटा दिया। यह मनुष्य के लिए बहुत शर्म की बात है कि वह नीच अनुरागों के पीछे अपना जीवन लुटा देता है।

★ स्त्री पुरुषों के संबंध में सदा पवित्र रहने की ज़रूरत है। स्त्री पुरुषों को सिवाए धर्म के विषय में मिलने के आपस में और कोई वास्ता न रखना चाहिए।

★ नीच सुख अनुरागी और नीच घृणाकारी मनुष्य अपने शरीर का भी दुश्मन है, आत्मा का तो है ही।

★ नेचर की Demand (मांग) यह है कि मनुष्य सब नीच अनुरागों से निकल आवे। परन्तु मनुष्य क्या करे? वह लाचार है। हम भी उस को हुक्म देकर नहीं निकाल सकते। नीच सुख अनुरागों से निकलने की विधि है। वह जब तक पूरी न हो तब तक मनुष्य उन से कैसे निकल सकता है? पहले मनुष्य को रोशनी मिले, बुरी बात उसे बुरी लगे। फिर उस को देव तेज मिले और उस बुरी बात के प्रति उसमें यथेष्ठ उच्च घृणा पैदा हो। तब कहीं उस बुराई से निकलने योग्य होगा। यदि यह विधि पूरी न हो, तो उस के आगे का रास्ता बन्द है।

धर्म जीवन

खण्ड 34 अंक 9
सितम्बर – 2023
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

अज्ञात अन्धेरे

जिस दिन सर्दी के मौसम में गहरी धुंध पड़ती है उस दिन सुबह तक कुछ दिखाई नहीं देता। काफी दिन चढ़ आने पर भी अन्धेरा छाया रहता है। यहां तक कि रेलगाड़ी के ईंजन की जोरदार रोशनी रेल मार्ग को, बसों ट्रकों आदि की लाईटस सड़कों को रोशन करने में असमर्थ दिखाई देती हैं। गहरी धुन्ध का अंधेरा, रात के घोर अंध कार से भी बढ़ जाता है। रेल वाले उस दिन सिग्नल का काम पटरी पर पटाखे रखकर करते हैं। सिग्नल भी दिखाई नहीं देते। पटाखे फूटने से रेल ड्राईवर को पता लग जाता है कि सिग्नल हुआ है और यह रेल को आगे ले जाता है।

रात के गहन अन्धेरे को सब देखते हैं, परन्तु कुछ ऐसे अन्धेरे हैं कि जो दिन दिहाड़े, सूर्य चमकते हुए, आंखे रखकर विद्या और बुद्धि रखकर दिखाई नहीं देते, उनका मनुष्य को पता भी नहीं लगता, अधिकतर जन इससे अनजान रहकर ही जीवन गुज़ार देते हैं। आओ हम इन अंधेरों को कुछ समझने का यत्न करें। हमारे हृदयों में अंधेरा भरा हुआ है। हमें वह अंधकार बिल्कुल दिखाई नहीं देता। इस हृदय के अंधकार में हमें बड़े बड़े गुणवान, महापुरुषों के सुन्दर जीवन दिखाई नहीं देते, यहां तक कि अपने परिवार में भी अक्सर अपने ही महान व्यक्ति की महानता को पहचान नहीं सकते।

ऋषि जी शिव दयाल सिंह जी के अति महान जीवन को गुरू महाराज ने तो देखा, पर उनके पारिवारिक जनों ने या रूड़की कालिज के जनों ने कुछ नहीं देखा। ऋषि जी के सारे परिवार में से एक बजुरग थे जो उन्हें देखते थे, केवल वही कहते थें कि हमारे घर में तो वली पैदा हुआ है, परन्तु यह कहने पर भी दूसरे जनों की उनकी कोई महानता नज़र नहीं आती थी। नानक जी को अकेले भाई लहिणा जी ने पहचाना, बाकी सब छोड़कर भाग गए थे।

हमें अपने माता पिता, बहन भाई, पति पत्नी के गुण नज़र नहीं आते, यदि कभी गुणों का बख़ान करते हैं तो वह भी अपने को बड़ा बनाने के लिए, उनको महान देखने के लिए नहीं। यही अंधकार है जो हमारे हृदयों में पसरा पड़ा है।

गुरु महाराज ने सारे मनुष्यमात्र की ओर संकेत करके फरमाया था कि "मैं अज्ञात हूं, मैं अनादृत हूं, मैं सन्तप्त हूं, मैं परित्यक्त हूं" मनुष्यात्माओं का हृदय का अंधकार देवात्मा को देखने ही नहीं देता। साधारणत: जब महा पुरुष इस दुनिया से चले जाते हैं, तो दुनिया उनको पहचानने लगती है। जान आफ आर्क को पहले

जिन्दा जला दिया, फिर उसे एक देवी समझकर 200 वर्ष बाद सेंट का विशेषण देकर सम्मानित किया। लिंकन को गोली मार दी, सुकरात को विष देकर मारा, अब सारा संसार उनकी पूजा करता है। यह सब मानव हृदय के अंधकार के लक्षण हैं। इस अंधकार में मनुष्य झूठमूठ अपने को महान देखता रहता है, दूसरों की महानता सारी उमर उसकी आंखों से ओझल रहती है।

हृदय में इस अंधकार के कारण हमें अपने ऊपर हुए उपकार नज़र नहीं आते। हम पर जान न्यौछावर करने वाले हमें बिल्कुल ही भूले रहते हैं। उपकारियों के उपकारी रूप की सुन्दरता देखने में असमर्थ होते जाते हैं। यह अंधकार कृतघ्न वा नाशुकरा बनने में कोई रोक लगने नहीं देता। हमें अपना स्वार्थ प्यारा है, अपना स्वार्थ पूरा होने के बाद उपकारियों का कोई मतलब हमारी जिन्दगी में नहीं रहता। यदि इस अंधकार से हमारे हृदय भरे हुए न होते तो हमारे हाथों माताओं का तिरस्कार न होता। पिताओं का निरादर न होता, वह रुलते, रोते दिखाई न देते। कोई अध्यापिका, डाक्टर और अन्य उपकार करने वाले निराशा वा हृदय की तड़पन में जीवन व्यतीत न करते। पत्नियों का त्याग वा बिछड़ना न होता। अंधेरा न होता तो उच्च स्थान रखने के अधिकारियों को पैरों में रुलाया न जाता, उन्हें उचित सम्मान मिलता, इस विश्व के यह दर्दनाक नज़ारे हमारे भीतर के अंधेरे के कारण हैं।

उच्च भावों के अभाव में हृदयों में अन्धेरा बढ़ता है। साधारणत: मनुष्य को दूसरों के अभाव दिखाई नहीं देते। अपनी ही पीड़ा को मनुष्य अनुभव करता है। इसीलिए यह कहावत है कि जिसको जूता काटता है, वह पहनने वाला ही उस पीड़ा को अनुभव कर सकता है। सड़कों पर हुई दुर्घटनाओं को देखकर मनुष्य गुज़रते रहते हैं या खड़े होकर तमाशा देखते हैं। एक शहर में एक नौजवान लड़का मेरे सामने पानी में छलांग लगा गया, मैंने पीछे छलांग लगाई, वह पानी में मिल नहीं रहा था। पटरी पर जाते हुए लोगों को मैंने बहुत पुकारा कि उस नौजवान लड़के को बचाने में मेरी सहायता करो परन्तु मेरी पुकार किसी ने नहीं सुनी। मनुष्य अत्यन्त स्वार्थी जीव है। जैसे कौए को पता नहीं लगता कि पशु के छोटे से घाव में अपनी चोंच मार मारकर उसको कितना दुख दे रहा है, उसी प्रकार बहुत से मनुष्यों को अपने सुख के लिए दूसरों को दुख देना खटकता नहीं। चोर डाकू दूसरों को मारकर लूट लेते हैं। यहां तक कि कान, नाक नोच लेते हैं, दूसरों के बच्चों को उठाकर पैसा वसूल करते हैं, परन्तु उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता। पराए जनों के लिए ही नहीं मनुष्य अपने सगे सम्बन्धियों को बिना उनके कसूर के अपनी हवसों का शिकार बनाते हैं। उनकी सुख, शान्ति, मान, इज्जत का अपहरण करके अपने को विजेता समझते हैं। अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी के पद छीनने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के झूठे, षडयन्त्रों का सहारा लेते हैं। पराया दुख उनके अन्धकारमय कठोर हृदयों को पिघलाता नहीं। ऐसे जन मनुष्य के रूप में हैवान बन जाते हैं।

दूसरों की पीड़ा से बेपरवाह मनुष्य को दूसरों के हक वा अधिकार भी दिखाई नहीं देते। विशेषकर जो बाहुबल में कमज़ोर हों, गरीब हों, छोटे हों, उनकी तो बिल्कुल ही परवाह नहीं होती। उनकी सच्ची और ठोस पुकार भी नजायज़ दिखती है।

मनुष्य को अपने हार्दिक अंधेरे में अपने

दोष कमियां दिखाई नहीं देतीं। कमिया दूसरों में देखकर एक एक जन आलोचना करता दिखाई देता है, परन्तु अपनी ओर ध्यान नहीं जाता। बड़े बड़े पदधारी होकर, डाक्टर वा इंजीनियर होकर, वैज्ञानिक होकर भी अपनी कमियों की ओर ध्यान नहीं जाता। उसका 'मैं' का प्यार, उसे शक तक नहीं होने देता कि वह किन किन दोषों के कारण कहां पहुंच गया। अपने आपको निर्दोष सुन्दर और दूसरों को अपनी कल्पना में ही अबोधी, बेअकल बनाते बनाते अपना वास्तविक रूप देखने के बिल्कुल अयोग्य होता जाता है। अपनी 'मैं' का प्यार उसको यह सोचने के योग्य ही नहीं रहने देता कि मेरे में भी कोई कमी हो सकती है। अपने हार्दिक अंधेरे में मनुष्य को अपनी जीवनी शक्ति, अपनी लाईफ फोर्स (आत्मा) जिससे ही उसका अस्तित्त्व है, बिल्कुल दिखाई नहीं देती। इसीलिए मनुष्य अपने शरीर और शारीरिक सुखों के लिए जिंदा रहता है। इसी अंधकार में सांसारिक पदार्थों, सांसारिक सुखों, सम्बन्धियों, मान सम्मान, पद प्रभुत्व को पाना ही अपना लक्ष्य समझता है, परन्तु अपने चालक भावों का कुछ भी ज्ञान उसे नहीं रहता। उसे यह सुध कहां कि कौन से भाव उसके लिए घातक हैं, कौन से उच्च भाव उसके विकासक हैं, नीच भाव घट रहे हैं या बढ़ रहे हैं, उच्च भाव घट रहे हैं या बढ़ रहे हैं। अंधाधुंध अपने नीच सुखों की तृप्ति में वा उनका पक्षपाती होकर उसके विरूद्ध सुनने की असमर्थता में अपना कीमती जीवन नष्ट करता रहता है।

मनुष्य का कोई धर्म, कोई पूजा पाठ, कोई नमाज़ रोजे और अन्य धर्म के कर्म काण्ड उसका यह अधेरा दूर करने में पूर्णत: असमर्थ हैं। यही कारण है कि धर्मों के दिन पर दिन बढ़ते जाने से मनुष्य का अंधकार न केवल कुछ छंटा नहीं बल्कि उसकी गिरफ्त कसती चली जा रही है।

उपरोक्त अंधकारों से निकलकर ही मनुष्य अपना विकास कर सकता है। ऐसे अंधकार से मानवता को निकालने के लिए ही नेचर ने अपने विकास क्रम में देवात्मा को प्रगट किया है। उनकी अद्वितीय रोशनी में ही मनुष्य की अपनी योग्यता के अनुसार आंखें खुलती हैं। यह मनुष्य का बहुत बड़ा सौभाग्य है। यह अद्वितीय ज्योति मनुष्य का देवात्मा की पैदा की उच्च संगत से मिल सकती है। जो जन अधिकारी हैं उन्हें उच्च संगत से यह रोशनी मिल सकती है।

इस रोशनी में ही एक एक नौजवान ने अपने अवगुण देखे हैं, अपने पिता के प्रति अपने अपराधों को देखा, उनके चरणों को प्रतिदिन धोने का संकल्प किया। गाली गलौच करने वाले, अपने पिता को अपमानित करके खुश होने वाले बच्चे का जब अंधकार छटता है तो धरती पर स्वर्ग उत्तर आता है, ऐसा बाप भी उस रोशनी दाता के आगे झुकने को मजबूर हो जाता है।

एक एक जन ने हकीम की कृपा से अपनी पत्नी को राजी तो कर लिया, परन्तु उसका उपकारी रूप कभी दिखाई नहीं दिया, परन्तु देवात्मा की रोशनी ने उस हकीम के लिए कृतज्ञता पैदा की, अपना कृतघ्न रूप दिखाई दिया और ऐसे उपकारी के लिए भेंट देने की प्रेरणाएं हासिल की।

एक एक जन का अंधेरा छटा और इस विचित्र रोशनी में यह पुकार उठा कि यदि यह ज्योति न मिलती, मेरा घिनौना रूप मुझे दिखाई न देता तो मैं या तो अपने बेटे को मार देता या वह मुझे मार देता। इस दरी पर बैठकर मेरा शोक

मनाया जाता। देवात्मा की रोशनी सब प्रकार के आत्मिक अन्धकार दूर करके एक नई दुनिया में प्रवेश करवाती है। रोशनी दूसरों के हक और अधिकारों को दिखाती है। दूसरों के दुख और पीड़ा को दिखाती है। अपने दोष और कमियों को दिखाती है। हमारा सचाई और भलाई की दुनिया में प्रवेश करवाती हैं यह ज्योति हमारी Life Force को मुख्य और अन्य सुखों को गौण दिखाती है। शारीरिक दुनिया में मनुष्य X-Ray का मुहताज है, उसी प्रकार आन्तरिक अंधेरा दूर करने के लिए मनुष्य देवात्मा की ज्योति का मुहताज है। कितने सौभाग्यवान हैं वह जन जो इस ज्योति को लाभ करने का संग्राम करते हैं और लाभ करते हैं

-बलदेव सिंह

मनुष्य जीवन की सफलता आत्म कल्याण में है।

कई वर्ष हुए हमारे ही छोटे से शहर की घटना है। एक किसान किसी की दुकान के आगे पेशाब करने लगा, दुकानदार ने उसे रोका तो उस किसान को इतना गुस्सा आया कि उसने अपनी रिवाल्वर से उस दुकानदार पर फायर करने शुरू कर दिए। दुकानदार तो बच गया परंतु एक अन्य नौजवान जो उस दुकान से कुछ सामान खरीदने आया था, वह उस फायर का निशाना हो गया और मारा गया। जब वह नौजवान अपने छोटे से बच्चे को साथ लेकर घर से निकला था, तब वह नहीं जानता था कि आज की शाम उसकी आखिरी शाम होगी और वह अपनी मौत की तरफ जा रहा है। ऐसी घटनाएं प्रतिदिन घटती रहती हैं।

6 फरवरी 2023 को सुबह सवा चार बजे के करीब जब तुर्की और सीरिया के लोग बेफिक्र सो रहे थे, तब भुचाल आया, जमीन के कई झटकों से लाखों घरों के ढह जाने के कारण लगभग चालीस हजार लोग हमेशा की नींद सो गए। उनमें से कई ऐसे भी होंगे, जो उसी रात वहां पहुंचे होंगे और ऐसा प्रतीत होता था कि मौत भुलावा देकर उन्हें वहां ले आई थी।

पिछले डेढ़ दो वर्षों से रूस और यूक्रेन का युद्ध चल रहा है। दोनों तरफ से लाखों सैनिक मारे जा चुके हैं। घर और बड़ी-बड़ी इमारतें तबाह हो चुकी हैं। किसी का पति युद्ध में मारा गया है, तो किसी का बेटा और किसी बच्चे के माता-पिता दोनों हमलों में मारे गए हैं। छोटे-छोटे बच्चे अपने खिलौनों को साथ लेकर इधर-उधर दौड़ रहे हैं।

अगर हम अपने चारों और नज़रें दौड़ाकर देखें तो मौत का खेल जारी है। मेरे साथ अलग अलग स्कूलों और कॉलेज में पढ़ने वाले, मेरे चार सहपाठी जो अभी पच्चीस वर्ष तक नहीं पहुंचे थे, किसी बिमारी व दुर्घटना का शिकार होकर परलोक जा चुके हैं। उनमें से कई एक तो बहुत होनहार थे।

एक सच्चाई जिसका नाम "मौत" है, उसका नाम सुनते ही प्राय: प्रत्येक व्यक्ति भयभीत हो जाता है। मौत एक बहुत बड़ी सच्चाई है, जो व्यक्ति इस धरती पर जन्म लेता है, एक ना एक दिन तो वह यहां से चला जाता है। हम सभी यह जानते हैं परन्तु हमें जीवन की इस सच्चाई का कोई बोध नहीं है। हमारे विचार साधारण ऐसे ही

होते हैं कि "मैं अभी तो युवा हूं, वा अधेड़ हूं, स्वस्थ हूं और तथा मैं अभी बहुत जिऊंगा, जीवन की यह सबसे बड़ी भूल है। अगर किसी को जीवन की असारता का बोध हो जाए तो उसके जीवन में बहुत बड़ी क्रांति आ सकती है। श्रद्धेय श्रीमान पी. वी. कनल जी के जीवन में इस बोध ने क्रांति पैदा कर दी थी। सन 1916 में श्रीमान जी का एक दोस्त मर गया, वह तहसीलदार था। कनल जी के दिल पर उसका बहुत गहरा आघात लगा। इससे उन्हें बार-बार यह प्रेरणा होने लगी, कि तुम भी अपने दोस्त की न्याई मर सकते हो और यदि तुम अब तक जीते रहे हो तो अपने आप को नेचर की अमानत समझो और उसे नेचर के विकासकारी कार्य में अर्पण कर दो। इस प्रेरणा से वे बहुत रोते थे और प्रार्थनाएं करते थे कि मेरा वकालत से शीघ्र छुटकारा हो जाए। फिर 1917 में कनल जी का एक जानकार वकील अपनी पत्नी सहित एक बीमारी से मर गया, यह दोनों 6 बच्चे पीछे छोड़ गए। सबसे बड़े लड़के की आयु 10 वर्ष की थी। इस घटना ने भी उनको बहुत रुलाया और उन्होंने अपनी धर्मपत्नी को कहा कि हम दोनों भी मर सकते थे, यदि संसार में रहकर एक एक जोड़ा अपने पीछे छोटे-छोटे बच्चों की मृत्यु के कारण छोड़ सकता है तो यदि हम भगवान देवात्मा के कार्य को करते हुए मर जाएं तो इस मित्र की मौत से ज़रूर बेहतर होंगे। जीवन की असारता के बोध ने उन्हें भगवान् के चरणों में लाकर बिठा दिया और उनका जीवन बहुत सफल हुआ।

मौत का आना निश्चित (certain) है परन्तु मौत कब आ जाए यह अनिश्चित (uncertain) है। इसलिए हमें अपने आप से यह प्रश्न करना चाहिए कि अगर आज मेरी जिंदगी का आखरी दिन हो तो क्या मैंने अपनी जिंदगी को सफल कर लिया है?

साधारण इंसान अपने जीवन की सफलता किन बातों में देखता है, वह अधिक से अधिक धन कमाने में अपने जीवन की सफलता देखता है। पढ़ाई भी इसी बात को लेकर की जाती है कि हमें अच्छी से अच्छी अधिक पैसों वाली नौकरी मिल सके। किसी ने अपने जीवन की सफलता कोई कला सीखने व सिखाने में, किसी ने विद्या लाभ करने में, किसी ने पूजा पाठ करने में, किसी ने कोई और काम करने में समझी हुई है। इन सारे कामों में जीवन की सफलता नहीं है यह तो चंद दिन की खुशियां हैं और फिर अंधेरी रात है।

हमारी एक बहुत करीबी रिश्तेदार हैं। पहले उनके पास इतना अच्छा घर नहीं था, उन्होंने लाखों रुपए खर्च करके बहुत शानदार घर बनाया। एक दिन वह बता रही थीं कि पहले तो कई दिन वह मकान को देखकर खुश होती थीं, परंतु अब तो साधारण सी बात लगती है। अब दिल में आता है कि इससे और बड़ा घर हो। इंसान अपने धन का बढ़ाने में सफलता ढूंढता है। एक करोड़ का मालिक चाहता है कि उसके पास कई और करोड़ आ जाएं। एक लड़की ने बताया कि मेरे नाना जी स्कूल के मास्टर थे, पढ़े लिखे थे। पर मेरी माता जी और मामा जी पढ़े नहीं। ऐसा क्यों? पूछने पर बताया कि मेरे नाना जी पैसे को इतना प्यार करते थे कि वह उसे कहीं खर्च नहीं करते थे। वह अपने बक्से में पैसे जोड़ते रहते थे। उनके ढेर बढ़ाते रहते थे। जब उनकी मृत्यु के बाद वह बक्सा खोला गया, तो नोट उठाते ही मिट्टी की तरह खुर गए क्योंकि वह पड़े पड़े खराब हो चुके थे। क्या उसने पैसों

के ढेर लगा कर अपना जीवन सफल कर लिया?

परम पूजनीय भगवान देवात्मा धर्म के निराले सूर्य उदय हुए हैं। उन्होंने अद्वितीय सच्चाईयों की खोज की है। उन्होंने यह तत्व बताया है कि मनुष्य जीवन की सफलता आत्म ज्ञान और आत्म कल्याण में है।

हम सारे मनुष्य सुख अनुरागी हैं। सुख अनुरागी होकर हम गलत खाने, बार-बार खाने, चोरी करके खाने में सुख पाते हैं और गलत खा खाकर बीमार होते हैं। दुखों और तकलीफों को सहेड़ते हैं। हम आराम से पड़े रहने और कम से कम काम करने में सुख पाते हैं। नशों के अनुरागी मनुष्य नशे के साथ अपने शरीर, अपने दिमाग, अपने परिवार और इज्ज़त का नाश करते हैं। काम वासना के गुलाम होकर नीच चिंताएं, नीच इच्छाएं, नीच बोल-चाल, नीच क्रियाएं करने में सुख पाते हैं। धन के अनुरागी होकर पैसों को अपने जीवन का लक्ष्य बनाते हैं। ईमानदारी व बेईमानी से धन कमाते कमाते अपने जीवन का नाश करते हैं। हम संतान के गुलाम है। हम अपने अभ्यास व अपनी संगत या दूसरे मनुष्यों के अनुराग के गुलाम हैं। हम झूठ के अनुरागी हैं। इन सब नीच सुख अनुरागों पर चोट लगने से हमारे अंदर नीच घृणा भी पैदा होती है। अपने इन सब नीच अनुरागों को बारीकी से जानना और वो भाव हमारे से क्या-क्या गतियां कराते हैं और हमारा क्या जीवन का हाल होता है, उसको जानना ही आत्मज्ञान है। अपने नीच जीवन को देवज्योति में देखना और उनके प्रति घृणा पैदा करने के लिए ऐसे संगीतों का पाठ करना, ऐसे लेखों का पढ़ना और धीरे-धीरे घृणा पैदा करके इन नीच सुख अनुरागों से मुक्ति लाभ करना और पहले की गई नीच गतियों के लिए दुख और परिशोध की आग में जलना, फिर और अधिक मात्रा में देव प्रभावों को पाकर उच्च भाव और सर्वोच्च उच्च भाव पैदा करना ही आत्म कल्याण है। यही लाभ करना मनुष्य का लक्ष्य है और इसी में मनुष्य जीवन की सफलता है।

गौतम गोनियाना

त्याग व्रत

देव समाज के शुरू काल से ही सितंबर का महीना त्याग व्रत के रूप में मनाया जाता है। भगवान देवात्मा की शिक्षा में त्याग की बहुत महानता है। भगवान देवात्मा ने यह जानकर कि बिना त्याग के जीवन उन्नत नहीं हो सकता, यह त्याग व्रत बनाया था। त्याग क्या होता है? किसी आकर्षण को पीछे छोड़ने के लिए बाध्य होना त्याग कहलाता है। बाहर की दुनिया में अपने माता-पिता, भाई-बहन, पत्नी, बच्चों आदि को छोड़कर साधु बन जाने को त्याग कहते हैं और त्याग करने वाले साधु आदि महात्मा कहलाते हैं। भगवान देवात्मा संबंध तत्व के अद्वितीय शिक्षक हैं। वह ऐसे त्याग को बहुत बड़ा पाप समझते हैं कि जिसमें इंसान अपने कर्तव्यों का त्याग करता है।

उन्होंने बताया है कि त्याग भी कई प्रकार का होता है। एक-एक वेसवा अपनी पवित्रता का त्याग कर देती है। बेईमान व्यक्ति ईमानदारी का त्याग करता है। सैर न करने वाला, गलत खाने वाला अपनी सेहत का त्याग करता है। घर बार त्याग कर साधू बनने वाला भी त्याग करता है। यह सब त्याग नीच त्याग हैं। इससे

आत्मा का नाश होता है।

एक - एक पढ़ने वाला लड़का वा लड़की अपनी पढ़ाई की खातिर परीक्षा के दिनों में खेल आदि का त्याग करता है और रातों को जाग कर पढ़ाई करता है और अपनी नींद का त्याग करता हैं। सैर, व्यायाम करने के लिए आलस्य का त्याग करना पड़ता है। सर्दी में बिस्तरा त्याग कर सुबह जल्दी उठना पड़ता है। यह त्याग अच्छे प्रकार के त्याग हैं।

एक - एक व्यक्ति अपने स्वार्थ को त्याग करके दूसरों की सेवा करता है। बीमारों को हस्पताल पहुंचाता है, बीमार पशुओं और मनुष्यों का इलाज करवाता है। गरीब और अंगहीन व्यक्तियों को खाने के लिए देता है। किसी पढ़ने वाले बच्चे को पढ़ाता है। उन्हें किताबें, कापियां, पेन आदि खरीद कर देता है, उनको स्कूल में दाख़िल करवाता है, गरीब बच्चों की फीस आदि देकर उन्हें पढ़ने में मदद करता है। एक - एक व्यक्ति समाज में फैली हुई बुराइयों को मिटाने के लिए जोर लगाता है। लोगों से नशे छुड़वाता है, मांसाहार, चोरी, रिश्वत, बेईमानी, व्यभिचार, जीव हत्या आदि छुड़वाता है। कोई - कोई अपनी सारी जिंदगी अच्छे व महान कार्य में खर्च करता है। यह सब त्याग उच्च लक्ष्य को लेकर त्याग हैं, इसलिए आत्मा के लिए महा कल्याणकारी त्याग हैं।

भगवान देवात्मा के अद्वितीय, परम कल्याणकारी मिशन के लिए उनके कर्मचारियों ने भी त्याग की अनोखी मिसालें पेश की हैं। उनके मिशन के लिए जब बहुत खराब और उत्पीड़न के हालात थे तो उनके कर्मचारी यह गा गाकर कि "सूखे टुकड़ें खाएंगे देव राज्य फैलाएंगे" प्रचार करते थे। श्रद्धेया जी ने अपने कपड़े बेच कर और एक दो कपड़े रखकर गुरु मिशन की खातिर त्याग किया। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी सिर पर बिस्तर उठाकर उस रतीले इलाके में जा पहुँचे जहां के रास्ते टेढ़े थे, और आदमी भी टेढ़े (जीवन के लिहाज से) थे। वहाँ जाकर एक कच्चे मकान में जहाँ चमगिदड़ों का घर था, नीचे कंबल बिछा कर पापी रूहों को बदलने का काम किया। भाई अमर सिंह जी, भाई मोहन देव जी आदि के त्याग की अनोखी मिसालें हैं। कनल जी जैसे चोटी के वकील जो सैकड़ों रुपए कमाते थे मात्र थोड़े से रुपए महीने पर महाराज का काम करने के लिए तैयार हो गए और सारी उम्र यही काम करते रहे। बठिंडा के इलाके (बाहीया) में श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी का काम, सिंध में भाई मोहन देव जी का काम, रायपुर रानी में स्वामी गोबिन्द राय जी का काम वा त्याग, गुरु भक्ति की मिसालें हैं। श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी राजाओं, महाराजाओं के रिश्तेदार सब कुछ त्याग करके विश्व की सर्वोच्च हस्ती (देवात्मा) की जाति सेवा करने लगे। श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी की जिंदगी त्याग से तपकर निख़र गई। एक बहुत बड़ा राईस अपने त्याग से अपने देश के बिगड़े बच्चों को सुधारने का काम करता है और कभी धर्म विकासालय द्वारा आत्माओं का हित करता है। श्रीमान धर्म प्यारी जी और डॉ हरनाम सिंह जी का अपने गुरू मिशन के लिए शहीद होना बहुत बड़े त्याग हैं।

इससे ऊपर भी त्याग हैं। देवात्मा श्री देव गुरू भगवान ने सत्य और शुभ को लाने व मिथ्या और अशुभ को नष्ट करने के लिए अद्वितीय त्याग किए हैं। यह त्याग, त्याग की सर्वश्रेष्ठ और सर्वोतम श्रेणी में आते हैं।

धर्म व उच्च जीवन लाभ करने के लिए

हमें स्वार्थ का त्याग करना चाहिए, भगवान देवात्मा ने अपने एक भजन में यह लिखा है :–

अहं स्वार्थ का है उत्पादक,
स्वार्थ भाव जीवन का नाशक।
स्वार्थ तजो तब जीवन पाओ,

पर उपकार करो सम्पादन।
उच्च गति का तब हो साधन,
तुम सेवक सच्चे कहलाओ।

इन दिनों हमारे धर्म संबंधी त्याग संबंधी जो साधन पूरे कर सकते हैं वह नमूने के तौर पर यह हैं :–

(1) अपनी एक दिन एक हफ्ता की या इस से भी ज्यादा अधिक दिनों की तन्ख्वाह टयूशन या आमदनी का दान।

(2) एक दो हफ्ता या महीनों अपने काम से छुट्टी लेकर देव समाज और उसकी संस्थाओं के लिए दान एकत्र करने का काम करना।

(3) अपने घर की फालतू या रद्दी चीज़ों, फर्नीचर, अखबारों और किताबों की रद्दी आदि बेचकर उनकी कीमत दान करना।

(4) कोई हाथ का काम या दस्तकारी का काम घर पर या कहीं और करके उसकी आमदन दान में देना।

(5) अपनी जमीन की कुछ आमदन दान करना या देव समाज के निमित ही कुछ जमीन काशत करना और उसकी आमदन दान में देना।

(6) अपनी जरूरत की कोई नई चीज़ न ख़रीद करके और उसके बगैर काम चला कर या किसी खाने पीने की स्वाददार या अन्य ऐसी चीज़ का त्याग करना कि जिस के बगैर काम चल सकता हो, उसके दाम दान में देना।

(7) घर पर या दुकान में कोई दान पात्र या डिब्बा रखकर खुद दान डालकर और संबंधियों और वाकिफकारों को उस में दान डालने की प्रेरणा करके जमा रकम दान करना।

(8) घर में रोज़ कुछ आटा इकट्टा करके उसकी कीमत दान में देना।

(9) अपने रोजाना जेब खर्च में से कुछ रकम बचाकर दान करना।

(10) अपना समय देकर देव समाज के अख़बारों के खरीददार बनाने, पुस्तकें फरोख़्त करने, पाप छुड़वाने और अन्य ऐसी ही सेवाएं करके देव समाज के महा हितकर काम को बढ़ाना आदि, आदि।

स्त्री, पुरुष, बच्चे सभी इन हितकर साधनों को अपनी–अपनी योग्यता अनुसार पूरा कर सकते हैं। हम सब सेवक सेविकाओं और सहायकों आदि को जहां खुद ऐसे साधनों में से एक या कई सारे पूरे करने की ज़रूरत है, वहाँ, अपने पारिवारिक जनों और वाकिफ़कारों को भी ऐसे साधन करने की प्रेरणा करने और बताने की ज़रूरत है कि किसी आला मकसद के लिए इन्सान कुछ स्वाद और धन आदि का त्याग करे और खास तौर से परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सर्वश्रेष्ठ कारज के लिए ऐसा त्याग करे तो सच्चे पुण्य का भागी बनता है और अपने आत्मा के बल को बढ़ाता है।

आशा है देव समाज के मेम्बरान और सहायक और उनके पारिवारिक संबंधी आदि ऐसे साधन करेंगे, और औरों से कराके देव समाज के साथ अपने जीवन्त सम्बन्ध का परिचय देंगे और अपनी बहुत बड़ी उपकारी समाज की उन्नति में मददगार बनेंगे।

नीच अनुराग और नीच घृणा मूलक महा विनाशकारी नीच गतियां और उनके महा भयानक फल।

अहं अनुराग। अहं अनुराग क्या? अपनी शकल सूरत, अपनी चाल ढाल, अपने स्वभाव अपनी राय, अपनी समझ, अपने मत और अपने विश्वासों आदि का अनुचित प्यार वा उन की बेज़ा तरफदारी। कोई जन जहां तक अपने भीतर कोई उच्च वा कल्याणकारी बोध रखता है, और उस के द्वारा वह नेचर के किसी विकास कार्य में जहां तक सहायक प्रमाणित होता है, वहां तक उस जन का अपनी किसी उच्च शक्ति को प्यार करना, उस की बिना पर अपने तंई (उस शक्ति से खाली जनों की अपेक्षा) बढ़िया वा सौभाग्यवान बोध करना और किसी उच्च कार्य के लिए अपने भीतर पवित्र जोश और उत्साह महसूस करना और यथावसर ऐसा हि प्रकाश करना और अपने ऐसे किसी उच्च वा हितकर भाव में नाना प्रकार की विरोधता के आने पर भी सदा दृढ़ रहना अहं अनुराग नहीं है, बल्कि एक वा दूसरे पहलु में सचाई और भलाई का प्रकाश और उस का साथ देना है, कि जो किसी मनुष्य के लिए बहुत बड़ी बरकत और सौभाग्य की वस्तु है। अब केवल यहीं नहीं कि हर पहलु में ऐसा महा सौभाग्य देवात्मा श्री देवगुरू भगवान् कि सिवाए मनुष्य जगत् के किसी मनुष्य को भी प्राप्त नहीं है, बल्कि उनमें से ऐसे जन भी दुर्लभ हैं कि जो किसी एक पहलु में भी अपने हृदय में सत्य और हित मूलक कोई उच्च अनुराग रखते हों। इसलिए करोड़ों मनुष्य सत्य वा हित विषयक किसी उच्च अनुराग से खाली रहकर और अहं वा "मैं" के अनुरागी बनकर अपने लिए और औरों के लिए नाना प्रकार की ऐसी महा भयानक हानियां उत्पन्न कर रहे हैं, कि जिस का दृश्य बहुत दर्दनाक वा शोचनीय है।

यूँ तो प्रत्येक नीच अनुराग ही मनुष्य के लिए महा विनाशकारी हैं, परन्तु यह अहं अनुराग एक 2 आत्मा की जैसी मत मार देता है जिस प्रकार उस की मट्टी पलीद करता है और उसे बुरी तरह तबाह और बर्बाद करता है, हां और तो और यह नीच अनुराग जीवन दाता देवात्मा के सर्वोच्च और मुख्य सम्बन्ध में भी जैसा कुछ फितूर डाल देता है, उस का मुकाबला किसी भी और नीच अनुराग से नहीं हो सकता। निश्चय किसी मनुष्य के लिए इस नीच अनुराग का मानसिक वा हार्दिक सच्चा बोध लाभ करना अत्यन्त कठिन वस्तु है। एक एक जन मोटे मोटे पाप कर्म छोड़ सकता है साधारण लोगों में अच्छा भला मानस आदमी कहला सकता है, एक एक जन धन छोड़ सकता है, बीवी बच्चे छोड़ सकता है, घर बार छोड़ सकता है, तन का त्याग कर सकता है, और एक वा दूसरे उच्च भाव से औरों के लिए सेवाकारी भी बन सकता है, परन्तु अहं अनुराग के विनाशकारी शिकंजे से नहीं निकल सकता। तब किसी भी सच्चे धर्म अभिलाषी जन के लिए इस महा नीच अनुराग का सच्चा ज्ञान लाभ करना और उसे मोक्ष लाभ ाकरने के योग्य बनना जिस कदर नितान्त आवश्यक वस्तु है, उस का अनुमान किया जा सकता है।

एक 2 अहं अनुरागी जन अपने अहं के वशीभूत होकर अपने और औरों के सम्बन्ध में क्या 2 नीच गतियां ग्रहण करने के लिए मजबूर होता है और अपने जीवन में नाना अंगों में किस

किस प्रकार के घाटे में रहता है, वह मोटे तौर पर यह हैं :-

एक 2 अहं अनुरागी जन,

1 – नाना नीच अनुरागों और नीच घृणाओं से मोक्ष और नाना सात्विक शक्तियों में विकास लाभ करने के संबंध में अपने भीतर कोई संग्राम महसूस नहीं करता और अपने आप में संतुष्ट रहता है।

2 – अहं अनुराग मूलक वा किसी और नीच अनुराग मूलक अपनी नीचताओं और अपराधों को अपने सामने लाने का सुयोग पाकर भी उन्हें सामने नहीं ला सकता और अपनी ऐसी अवस्था को प्रकृत रूप में सामने लाकर उसे घृणित रूप में नहीं देख सकता। और न हि अपने नाना अपराधों का सच्चा परिशोध करने के लिए तैयार हो सकता है।

3 – अपने आप को एक वा दूसरे पहलू में ऐसा बढ़िया, ऐसा सुन्दर, ऐसा तजुरबेकार, ऐसा दाना, ऐसा होशियार और ऐसा शक्तिमान अनुभव करता है कि जैसा वास्तव में वह नहीं है। अर्थात् एक वा दूसरे पहलु में अपने वजूद, अपने भावों और अपने कामों की उचित से बहुत ज्यादा कीमत लगाता है और उसकी अपेक्षा एक 2 पहलु में जो दरअसल बढ़िया वजूद हैं उन्हें घटिया महसूस वा प्रकाश करता है।

4 – आप अपनी झूठी तारीफ करके वा औरों से सुनकर खुशी लाभ करता है वा अपने आप में फूलता है।

5 – एक 2 भले काम के सम्बन्ध में अयोग्य होकर भी अपने तईं योग्य ज़ाहिर करता है।

6 – जो काम नहीं जानता, उन में भी एक 2 बार ख़्वाहमख़्वा दख़ल अन्दाजी करता है। और अपने तईं ऐसा प्रगट करता है कि जैसे वह उस काम को जानता है।

7 – अपने किसी पाप कर्म को अनुभव करने के योग्य होकर भी अपनी हेठी होने के भय से या किसी सजा के डर से उसे स्वीकार नहीं करता।

8 – अपने किसी दोष वा अपराध के विषय में और तो और अपने किसी हितकारी वा परम हितकारी से भी कोई बात सुनना वा कोई झिड़की सहना गवारा नहीं करता।

9 – औरों की निन्दा करता है अर्थात् बिना किसी उचित कारण वा शुभ उद्देश्य के औरों की किसी सच्ची वा झूठी हीनता वा नीचता का वर्णन करता है और ऐसा करके अपने आप में बहुत महान महसूस करता और फूलता है।

10 – इस नीच अनुराग के बहुत बढ़ जाने पर औरों की खूबियों वा अच्छे कामों का ज़िकर तक पसन्द नहीं करता और इसलिए जहां कही ऐसा मौका होता है वहां जान बूझकर दूसरे को हेठा ज़ाहिर करने के लिए उस के किसी सच्चे वा झूठे अवगुण का वर्णन करना शुरू कर देता है।

11 – इस नीच अनुराग के बहुत बढ़ जाने पर औरों की खूबियों को देख वा सुनकर अपने आप में सुकड़ता है वा अपने हृदय में जलन और दुख अनुभव करके उस के सम्बन्ध में नाना प्रकार के हानिकारक कर्म करने के लिए तैयार हो जाता है।

12 – अपनी अपेक्षा किसी और जन का किसी सद्गुण के विचार से आगे बढ़ जाना पसन्द नहीं करता।

13 – किसी अच्छे प्रबन्ध का साथ नहीं दे सकता और जो कुछ अपना जी करे (वह चाहे कैसा भी अनुचित हो) उसी की पैरवी करना चाहता है और किसी उच्च कार्य के सम्बन्ध में भरोसे के

लायक, सेवाकारी अंग नहीं बन सकता।

14 – औरों का उचित सम्मान नहीं कर सकता, बल्कि नाना सम्बन्धों में बहुत बे अदबी और गुस्ताख़ी का प्रकाश करता है।

15 – जो बात उस की अपनी समझ वा भावों से अतीत हो, उसे किसी और के जीवन में सम्भव होने पर भी असम्भव महसूस करता है और किसी तरह मानने के लिए तैयार नहीं होता।

16 – अपने स्वभाव चालढाल, समझ, राय और विश्वास आदि के विरुद्ध कोई स्वभाव, चालढाल, समझ, राय और विश्वास आदि रखने वाले जनों को (चाहे वह उस की अपेक्षा कितने हि बढ़िया वजूद हों) घृणा करता है।

17 – सदा इस बात का आकांक्षी रहता है कि जिन जनों के साथ उस का वास्ता पड़े, वह औरों की अपेक्षा उस की तरफ अधिक ध्यान दें और उस का अधिक आदर सम्मान करें (चाहे वह इस का अधिकारी न हो)

18 – अपने विरुद्ध मत प्रकाश करने वालों वा अपने किसी अपराध पर रोक टोक करने वाले जनों को शत्रु की दृष्टि से देखता है (चाहे वह उस का केवल हित हि चाहते हों)

19 – अपनी अवज्ञाओं को मानना नहीं चाहता और उनकी पोषकता में झूठी दलील देता है और जहां कहीं अपनी किसी अवज्ञा वा अपने किसी अपराध के स्वीकार करने के लिए लाचार हो जाता है वहां पर अपने आप में बड़ा जिच विच होकर उसे स्वीकार करता हैं

20 – अपने नाना अवगुणों को सद्गुणों के रूप में और औरों के नाना सद्गुणों को अवगुणों के रूप में देखता और प्रगट करता है।

21 – नाना धर्म बोधों के विचार से और तो और एक 2 बार अपने आप को सत्य और हित स्वरूप देवात्मा से भी बढ़िया अनुभव और प्रकाश करता है।

22 – किसी बड़े की गलती को देख कर उस की खिल्ली उड़ाता है। और किसी मामूली बात में उस की अपेक्षा बढ़िया होने की सूरत में अपने आप को बहुत बढ़िया और उसे तुच्छ देखता है।

23 – आत्मा के विचार से दिनों दिन अधिक अंधा, रोगी और कठोर बनता जाकर उच्च जीवन में विकास लाभ करने से अधिक से अधिक अयोग्य बनता जाता है और आत्मिक विनाश की नाना प्रकार की महा हानियों का ज़्यादा से ज़्यादा भागी होता जाता है।

24 – और तो और परम हित कर्ता देव रूप धारी देवात्मा की ओर से भी अपने किसी अपराध के विषय में कुछ रोक टोक हासिल करने पर बजाय इस के कि उन के लिए अपने आप को कृतज्ञ अनुभव करे और अपने परम हित कर्ता को धन्यवाद दे, उलटा उन से रूठ जाता है और उन का मुंह तक देखना नहीं चाहता हौर उनके प्रति महा विनाशकारी घृणाभाव को बढ़ाकर मानों अपने आत्मिक खुदकुशी करने के लिए तैयार हो जाता है, और अपने जीवन में नाना प्रकार के मोटे - 2 पापों से बचा रहकर और कई अच्छे भाव भी अपने भीतर रखकर अहं अनुराग के महा विनाशकारी ज़हर से ऐसा पागल और कोढ़ी बनता है और इस तौर पर सड़ गल कर विनष्ट होता है कि जिस का दृश्य अत्यन्त भयानक है।

ओह! अहं अनुराग का कैसा महा भयानक अंजाम!!

काश कि हम लोग देवात्मा की देव ज्योति में अपने अहं अनुराग की अत्यन्त भयानक और महा विनाशकारी छवि को उज्जवल रूप में देख सकें और उससे उद्धार लाभ करने के सच्चे साधनों में प्रवृत हो सकें।

(सेवक खंड 14 संख्या 11)

मनुष्य आत्मा के आत्मिक पतन का सत्य ज्ञान और सत्य बोध

मुबारिक हैं वे जन जो भगवान् देवात्मा के दरबार में आये हुए हैं। उनको जो सब से बड़ा दान मिला है, वह यह है कि वह धर्म के सम्बन्ध में कुल मिथ्या विश्वासों से छुटकारा पा जाते हैं। इसलिए मिथ्याओं की काली घटाओं से निकल कर वह सत्य ज्ञान के पथ के राही हो जाते हैं। यह सत्य है कि मिथ्या की काली घटा से निकल कर और मूल वाक्य के सत्य विश्वासी होकर, जब वह आत्मिक सत्य ज्ञान की राह पर कदम रखते हैं, तब सवाल यह पैदा होता है, कि इस राह के मुसाफिर होकर कहां तक वह इस राह को तय करने के लिए जन्म जात योग्यता रखते हैं। देव ज्योति के दान पाने का द्वार तो सब देव समाजियों के लिए खुला रहता है, परन्तु यह क्यों होता है कि एक जन तो श्रीमान देवत्व सिंह जी बन जाते हैं या पंडित हरनारायण जी भी बन जाते हैं और दूसरे जन मामूली से मामूली आत्मिक सत्यों को समझने और ग्रहण करने की सामर्थ नहीं रखते। एक जन तो श्रीमान् भाई मोहन देव जी की तरह इस कदर देव ज्योति पा लेते हैं, कि दो अढ़ाई महीने की संगत के बाद वह दुनियावी लाभों को लात मार कर परोपकार के कठिन पथ पर अपना पांव जा रखते हैं और चालीस साल से भी अधिक काल तक उसी परोपकार के मार्ग पर साबत कदम रहते हैं और भगवान् देवात्मा के चरणों में स्थूल देह त्याग करते हैं, लेकिन एक और आत्मा भगवान् देवात्मा के प्रभावों को पाकर कई सालों तक सेवक होकर अपने गुरू देवात्मा से ही कट जाता है और पाप जीवन में ही अपनी उम्र गुज़ार देता है।

भगवान् देवात्मा की प्रकट ही हुई सचाई पढ़ना एक बात है, लेकिन उसको उपलब्ध करना और उस पर बलिहार जाना बिल्कुल और बात है। भगवान् देवात्मा के प्रगट किए हुए किसी सत्य को समझना एक बात है, लेकिन उसकी छिपी हुई महा सुन्दरता को अनुभव करना और उसके सम्बन्ध में लेख लिखना और लेख लिखते लिखते गद् गद् हो जाना बिल्कुल और बात है। एक एक जन के लिए यह आसान हो जाता है, कि कोई सभा करा दे या कई सभाएं करा दे, परन्तु भगवान् देवात्मा के सत्यों और तत्वों के सम्बन्ध में कोई उच्च कोटी की पुस्तक लिखना और बात है। एक एक जन की सारी आयु देव समाज में कट जाती है, परन्तु न वह किसी स्तर का लेखक बनता है और न किसी स्तर का प्रचारक। इसलिए जन्म जात योग्यता की बहुत बड़ी विशेषता है। ज्यों ज्यों योग्य जन भगवान् देवात्मा के सेवक बनते जाएंगे, त्यों त्यों सत्य ज्ञान के पाने और फैलाने के अधिकारी पैदा होते जाएंगे, अन्यथा नहीं।

आत्मिक पतन किसे कहते हैं? उसके बारे में हम पहले बता चुके हैं, कि किसी भली दशा से गिर कर किसी बुरी दशा में पहुंच जाना पतन कहलाता है। अब प्रश्न यह पैदा हो सकता है, कि हम किस तरह से जानें कि किसी जन का आत्मिक पतन हो रहा है। भगवान् देवात्मा ने ऐसे ही किसी प्रश्न के उत्तर में वर्णन किया है:

"मनुष्य आत्माओं का पतन जिन चार

प्रकार के बड़े बड़े लक्षणों से जाना जा सकता है, उसमें से एक यह आत्मिक कठोरता और उसके द्वारा उनमें आत्मिक अन्धकार और अन्धता की उत्पत्ति।"

अब इस बारे में स्वभाविक यह सवाल पैदा हो सकता है, कि आत्मिक कठोरता क्या होती है? भगवान् देवात्मा की शिक्षा के आधार पर इसका उत्तर यह है कि मनुष्य आत्मा की अन्धता की दशा कठोरता की दशा कहलाती है।

इसके सम्बन्ध में यह प्रश्न पैदा होता है कि मनुष्य आत्मा की अन्धता की दशा क्या है? आत्मिक सत्यों को देखने की योग्यता के पूर्णत: खो चुकने की हालत या दशा को आत्मिक अन्धता की दशा कहते हैं।

अब नेचर के भीतर जो एक विचित्र नियम काम कर रहा है, उसका नाम विकास विषयक नियम है। विकास विषयक नियम के भंग करने की दशा को आत्मिक पतन या विनाश की दशा कहते हैं। जब कोई मनुष्य आत्मा नीच सुखों का बोधी होकर उनका अनुरागी या दास बन जाता है और उन्हीं सुखों की प्राप्ति को अपना लक्ष्य समझता है और अपनी विविध प्रकार की गतियों से विविधि प्रकार की मिथ्याओं और विविध प्रकार के अहितों की उत्पत्ति करता है, तब उसके लिए यह अनिवार्य हो जाता है, कि वह नेचर के विकास के नियम को भंग करे। ज्यों ज्यों ऐसा जन विकास के नियम दिनों दिन भंग करता रहता है, त्यों त्यों वह इस योग्य ही नहीं रहता कि अपना आत्मिक पतन और आत्मिक विनाश देख सके।

इस कठोरता के उत्पन्न होने से न केवल एक एक जन अपनी आत्मिक पतन की भयानक दशा को देखने के अयोग्य हो जाता है, किन्तु उसके भीतर देव ज्योति के प्रवेश करने का मार्ग भी बन्द हो जाता है।

देव ज्योति के प्रवेश करने से ही अधि कारी आत्मा उन अमूल्य आत्मिक सत्यों को देख सकते हैं, कि जो आत्मा के रूप, उसके रोगों वा उसके पतन की दशा, उस पतन की दशा से उसकी सत्य मोक्ष और उसके उच्च विकास की आवश्यकता से सम्बन्ध रखते है। ऐसे कुल सत्यों और तत्वों से आज्ञानी होना या अन्धकार में रहना आत्मिक अन्धकार कहलाता है।

अब ऐसे आत्मिक अन्धकार ग्रस्त आत्माओं को यदि किसी सभा में बिठाया जाये, और उनके सामने आत्मिक गूढ़ सत्यों का प्रकाश किया जावे, तो वह वैसा ही है, जैसे अन्धे के सामने शीशा रखना। ऐसे जनों को यदि कोई सत्य ज्ञान दायनी पुस्तक पढ़ने के लिए दी जावे और उसे वह पढ़ भी लेवें, तो भी उन्हें अपने मिथ्या विश्वासों का मिथ्यापन दिखाई नहीं देगा और इस पुस्तक का बार बार पाठ करने पर भी वह अन्धे के अन्धे ही रहेंगे।

ऐसे आत्मिक अन्धकार ग्रस्त जनों के लिए सत्य मोक्ष का द्वार इसलिए नहीं खुल सकता, कि वह अपने आपको नीच अनुरागों वा नीच घृणाओं के दास रह कर भी बीमार वा रोगी नहीं जानते वा नहीं समझते। वह अपने किसी आत्मिक पतन से कोई कष्ट अनुभव नहीं करते, किन्तु उल्टा उसमें सुख अनुभव करते हैं। ऐसे जन आत्मिक पतन और आत्मिक मृत्यु के प्रेमिक कहलाते हैं। ऐसे जनों की यह दशा कितनी भयानक!

(पी. वी. कनल)

अपने आप (अस्तित्व) का ज्ञान 2

पहले भाग में हमने अपने अस्तित्त्व के सम्बन्ध में समझने की आवश्यकता क्यों हैं? इसका और आत्मा के भीतर शरीर विषयक सुख अनुरागों पर रोशनी डाले का यत्न किया था कि कैसे स्वाद अनुराग, नशा अनुराग, काम अनुराग और आलस्य अनुराग से एक 2 जीवन बर्बाद हो रहा है।

अब इस लेख में हम एक और सुख अनुराग के विषय में परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शिक्षा के अनुसार चर्चा करेंगे।

(1) सन्तान सम्बन्धी सुख अनुराग।

सन्तान सुख एक अलग चीज़ है, सन्तान सुख अनुराग अलग है। सन्तान का पैदा होना माता पिता के लिए बहुत सुख प्रदान करता है। उनके मातृत्व और पितृत्व प्रेम की सन्तुष्टी होती है। छोटे छोटे मासूम बच्चे, उनकी हरकतें, उनका तोतलापन, उनका मामा, पापा बुलाना माता पिता को गर्व से भर देता है। सन्तान सुख पशुओं से मनुष्यों में विकसित हुआ है। एक एक बिल्ली, कुत्ता, गाय, भैंस और सब अन्य जानवर बच्चे को जन्म देकर, उसके उड़ने चरने के योग्य होने तक पूरा उनका ध्यान वा बचाव करते हैं, परन्तु वह बच्चों से बन्धते नहीं परन्तु मनुष्य में स्वभाविक ही सन्तान प्रेम, सन्तान अनुराग में परिवर्तित हो जाता है।

माता पिता बच्चों को प्रसन्न करने के लिए उन्हें ऐसी चीज़े खाने के अभ्यासी बना देते हैं जो उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। आजकल तो खाने के इतने स्वाददार व्यंजन मिलते हैं कि माता पिता स्वयं उसके अभ्यासी हो जाते हैं और बच्चों को भी वैसा ही बना लेते हैं। ज्यादा मीठा, तीख़ा खाने के अभ्यासी बनाने के कारण छोटी उमर में ही बच्चों में मोटापा बढ़ रहा है, शूगर की बीमारी हो रही है। बच्चों का मोटापा अमरीका में बहुत अधिक था, अब भी है, परन्तु सरकार अब जाग्रित हुई है और कुछ माता पिता भी। परन्तु वही कल्चर हमारे देश में पनप चुकी है। इसका यह भी मतलब नहीं कि बच्चों को कुछ स्वाददार चीज़े न दो, परन्तु आज सब रैडीमेड मिलता है तो माता पिता अपने लाड में उन्हें बाज़ारी चीज़े खाने के अभ्यासी बना लेते हैं। जो माताएं कुछ इस विषय में जाग्रित हैं, वह बच्चों को भी जाग्रित करती हैं। कहीं कहीं छोटे छोटे बच्चे यह कहते हैं कि यह चीज़ हैलथी नहीं- इससे दांत खराब हो जाते हैं। बच्चे को बचपन से जाग्रित करना आवश्यक है। परन्तु सन्तान अनुरागी मनुष्य बच्चे को खुश करने के लिए या उसके ज़िद करने पर उसे किसी बात से मना नहीं कर सकते।

कई बच्चे बचपन से ही अशिष्ट बोलने लगते हैं, माता पिता यह कहते सुने जाते हैं कि अभी बच्चा है, परन्तु धीरे धीरे वह बच्चा उदण्ड हो जाता है। वह अपनी मनमानी करता है। पैसों की अनुचित मांग पूरी करते करते बच्चा जबरदस्ती पैसे लेने के लिए माता पिता को मजबूर करता है और कई बार मारने दौड़ता है, कई बार हत्या तक कर देता है। घर से ही चोरी करने लगता है।

इसका एक ही मुख्य कारण है कि यदि अपने सन्तान के अनुचित अनुराग से प्रेरित न होकर माता पिता ने उसको रोका, टोका होता, प्यार से समझाया होता, तो यह हालात पैदा न होते। बच्चा कमाने खाने के योग्य होकर भी माता

पिता से तरह तरह के तकाज़े करते रहते हैं और माता पिता दुखी होकर भी उसे पूरा करते रहते हैं। इससे सन्तान निकम्मी और स्वार्थी हो जाती है।

एक लड़का शादीशुदा था और अपनी मां को अनादर करता रहता था। घर मां का था, परन्तु बिचारी डरी सहमी माँ कुछ नहीं बोलती थी, मुझे पता लगा तो मैंने उसे हौसला दिया और कहा कि तुम्हारा एक मजबूत फैसला उसकी सब अकड़ निकाल देगा, तुम कहो कि "यदि तुमने मेरे साथ ऐसा ही व्यवहार करना है, तो चलो अपना समान उठाओ और मेरे घर से निकल जाओ।" ऐसा कहना ही था कि उसकी होश ठिकाने आ गई और उसके बाद उस विधवा माता के साथ उसने कभी अभद्र व्यवहार नहीं किया। जब बच्चा एक दफा माता पिता को ग़ल्त तरीके से बोलता है, तो माता पिता सहन न करें, तो बच्चा समझ जाता है कि ऐसा करने से मेरा कोई सुख छिन्न सकता है। छोटा बच्चा हो तो उसको छोटी सज़ा दो। उसकी पसन्द की चीज़े खाने को न दो, टी. वी पर बैन लगा दो, या ऐसी उसकी प्यारी चीज़ उससे ले लो, तो दो चार बार ऐसा करने से उसे अक्ल आ जाएगी। यदि बचपन में कंट्रोल न किया गया तो बड़े होकर उसका अहं इतना बढ़ जाता है और माता पिता शक्तिहीन हो जाते हैं। इसलिए फिर उनकी पेश नहीं जाती। परन्तु मनुष्य का सन्तान अनुराग ऐसा करने नहीं देता। आजकल तो माता पिता इतने डरे रहते हैं कि हमने कुछ कहा तो यह कुछ कर न ले और बच्चे डराते रहते हैं। एक बच्चे ने ज़हर खा लिया, फिर मां बाप को बता दिया, इसका साफ अर्थ था, वह मरना नहीं चाहता था, डराना चाहता था और माता पिता डर भी गए। परम पूजनीय भगवान देवात्मा फरमाते हैं :-

"सन्तान अनुरागी जन अपने इस नीच अनुराग के दास होने के कारण अपनी सन्तान की कई बातों को उसके आग्रह करने पर मान लेने के लिए तैयार हो जाते हैं, कि जिनको वह आप भी बुरा वा पाप मूलक जानते हैं, और उसकी एक वा दूसरी प्रकार की किसी बुरी वा पाप मूलक क्रिया के सम्बन्ध में इस डर से रोक व टोक नहीं करते, कि वह कहीं उनसे अपना सम्बन्ध न काट ले, और इस प्रकार से वह क्या उसका और क्या अपना कई प्रकार का अशुभ करते हैं।

"फिर कितने ही ऐसे जन यह जानकर भी कि वह अपनी जिस सन्तान के अनुरक्त हैं, वह सन्तान उनके प्रति कोई अनुराग उनके प्रति कोई कृतज्ञ भाव नहीं रखती और अन्य समयों को छोड़कर वह उनकी किसी बीमारी वा विशेष विपद आदि के समय में भी उनकी कोई सेवा, शुश्रुया वा सहाय नहीं करती, और इससे भी बढ़कर उन्हें अपनी कई प्रकार की बुरी क्रियाओं से सताती और आघात पहुँचाती रहती है, उनमें से कोई कोई उनकी धन सम्पत्ति पर शीघ्र अधिकार पाने के निमित्त उनके शीघ्र मर जाने तक की भी अकांक्षाएं करती है, अथवा उनकी शत्रु बनकर उनके प्रति कई प्रकार से शत्रुता का आचरण प्रदर्शन करती है, फिर भी अपने सन्तान विषयक सुख अनुराग के कारण केवल यही नहीं, कि वह यह सब कुछ अशुभ होने देते हैं, किन्तु उससे अपना इस प्रकार का यह अहित उत्पादक और दोनों के लिए महा हानिकारक सम्बन्ध काट तक नही सकते। और इससे भी बढ़कर उनकी सन्तान अपने जिन जिन बुरे कर्मों के द्वारा अपना एक वा दूसरा नीच सुख ढूढ़ती है, उसकी उन्ही बुरे कर्मों की तृप्ति में सहायक बनने के लिए, अपने धन और सम्पत्ति को उसी को देना चाहते हैं, और इस प्रकार से यह अधर्म के साथी और सहायक बनते हैं।"

सन्तान अनुरागी मनुष्य अपनी सन्तान की बात पर अटूट विश्वास करता है और कोई बड़ा भी साक्षी दे कि उसकी बात ग़ल्त है तो भी वह अपनी सन्तान का ही पक्ष लेता है, और कई बार अपने उपकारियों से भी सम्बन्ध तोड़ लेता है। सन्तान का अनुराग मनुष्य को अन्धा और पक्षपाती बना देता है ओर सनतान इसका भरपूर फ़ायदा उठाती है। ऐसी घटनाएं घरों में घटती रहती हैं और बच्चे माता पिता की इस कमज़ोरी का लाभ उठाते हैं और नज़दीकी रिश्तों में अन्मेल पैदा हो जाता है। सन्तान को उचित प्रेम करें परन्तु पक्षपात में अन्धे होकर उनकी झूठी शिकायतों पर आग बबूला न हों। बात की तह तक जाने की कोशिश करो, तुरन्त प्रतिक्रिया न दिखाओ। ताकि बच्चे आपकी कमज़ोरी का लाभ न उठाएं। परम पूजनीय भगवान की उपरोक्त देव वाणी को ध्यान से पढ़ें और इस विषय में अपनी 2 अवस्था को हम सब देख सकें। बच्चों को संवारना माता पिता के हाथ में है, बशर्ते वह अपने अनुराग से उन्हें उदण्ड और जिद्दी न बना दें।

- सुरजीत बराड़

शुभ संग्राम

मल्लेका (सिरसा) गोपाल कृष्ण जी लिखते हैं कि : माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी और अन्य धर्म सम्बन्धियों की प्रेरणा से मैंने कई धर्म सम्बन्धियों को फोन पर और कईयों के घरों में जाकर विजिट किया। जिसमें श्रीमान सुन्दर लाल जी, श्रीमान सुखदेव जी जोसन वा श्रीमान जगीर सिंह जी ने बहुत सहयोग दिया। स्थानीय मन्दिर में सभा में अधिक से अधिक जनों को आने की प्रेरणा मिली। इसके लिए धर्म सम्बन्धियों ने दिल से आभार माना और सभा में आने की खुशी से हामी भरी। इसके बाद रविवार की सभा में संख्या बढ़ने लगी।

सभा के बाद मन्दिर में बहुत से पंखों की आवश्यकता अनुसार माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी के सुझाव पर पंखे लगवाने की अपील की। इसमें श्रीमान जगीर सिंह जी केसूपुरा, श्रीमान बलदेव सिंह जी ढाणी, श्रीमान सुन्दर लाल जी ने 2500 - 2500 रुपये नकद दान दिया। इसके ईलावा गजसिंह पुर, पदमपुर, गंगानगर, मल्लेका वा केसूपुरा से इस सेवा के लिए वायदे किए।

मन्दिर में पिछले दिनों विशेष प्रकार के पौधारोपण का काम किया गया। जिसके लिए 2500 रुपये की राशि भी श्रीमान जगीर सिंह जी ने दी।

श्रीमान सुखदेव जी जोसन पक्के पहरेदार की तरह मन्दिर की सेवा में लगे हुए हैं, सुन्दर लाल जी और जगीर सिंह जी भी सहयोग देते रहते हैं।

मल्लेका में रविवार को 30.7.2023 को सुबह सभा की गई। गुरू महाराज की छवि द्वारा अर्चण और प्रणाम के साधन के बाद श्रीमान जगीर सिंह जी ने "शरण तुमरी न आता मैं, तो क्या होता, कहां होता" भाव विभोर होकर भजन गाया। बहुत उच्च मण्डल बना। सबके हृदय ही द्रवित हो रहे थे। धीरे 2 धर्म सम्बन्धियों की संख्या बढ़ने लगी है।

सभा में श्रद्धा और सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी की लेख माला में से "पाप के रूप" विषय पर सभा हुई। इसमें बताया गया कि मनुष्य मुश्किल से मोटे पापों को ही

जानने और समझने के योग्य हुआ है जैसे कि चोरी, ठगी, नशे, बदचलनी, मांसाहार, हत्या आदि। परन्तु पाप के सूक्ष्म रुप भी होते हैं, अर्थात मिथ्या, हानिकारक विश्वास, झूठे वा दुखदाई वचन, निन्दा, चुगली, कड़वे बोल, रूखे बोल आदि भी सूक्ष्म पाप हैं। इसी प्रकार अपनी बुरी सोच वा उसका दूसरों के पास प्रचार, बुरी दृष्टि सब सूक्ष्म पाप हैं, जिनका नज़र आना कठिन है। देव प्रभाव दायक मण्डल में परम पूजनीय भगवान की ज्योति में ही नज़र आ सकते हैं। सारी सभा वा बातचीत से सब धर्म सम्बन्धी प्रभावित हुए। आपस में मिलने जुलने की अकांक्षा भी पैदा हुई। एक नये जन ने इस न्यारी शिक्षा की पुस्तक पढ़ने की इच्छा जताई।

उच्च धर्म सम्बन्धियों की प्रेरणा से श्रीमान गौतम जी गोनियाना मंडी से 12.08.2023 को मल्लेका (सिरसा) धर्म सम्बन्धियों को मिलने के लिए पहुँचे। वह सुखदेव जी के घर रुके। सुखदेव जी का घर जहां अकसर बाहर से आए धर्म सम्बन्धियों का स्वागत करता है और रहन सहन का प्रबन्ध करता है। धर्म सम्बन्धी उनके इस उदारदिली और प्रेम-मय व्यवहार और आवभगत के आगे हृदय में धन्यवादी होते हैं। श्रीमान गोपाल जी, गौतम जी, श्रीमान सुखदेव जी और जगीर सिंह जी की सहायता से अलग अलग गाँवों में जाकर श्रद्धालु जनों को मिले। उन्होंने बड़ी तनमयता वा नर्म दिली से गुरू मिशन में आने वा उसे परखने और लाभ उठाने के लिए उन्हें निमन्त्रण दिया।

13.08.2023, रविवार को मन्दिर में सभा करवाई गई। सब धर्म सम्बन्धियों को फोन द्वारा सूचित किया गया। सभा में पहुँचने वालों की लगभग 27 जनों की हाज़री थी। पूजनीय भगवान का छवि द्वारा फूलों द्वारा अर्चन, देव स्तोत्र का गान और गुरूदेव राज जी के दो भजनों एक महिमा विषयक और दूसरा कामना विषयक का गान करने के बाद सभा की कार्यवाही आरम्भ हुई। सभा में विश्लेषण किया गया कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा के अद्वितीय देव असरों से कैसे कैसे हितकर परिवर्तन हुए हैं सभापति श्रीमान गौतम जी ने उसका श्रद्धा और दीनता पूर्वक वर्णन किया। सभा के अन्त में उन्होंने सत्य धर्म उत्सव पर आने के लिए तैयार रहने की प्रार्थना की और निमन्त्रण दिया सभापति जी की शालीनता वा दीनता से कई जन बहुत प्रभावित हुए। 2 नये जन भी सभा में सम्मलित हुए।

20.08.2023 रविवार को मल्लेकां सिरसा में प्रिंसीपल श्रीमान सरताज जी ने सभा करवाई। सभा से पहले श्रीमन दूनीचन्द जी व श्रीमान गुरदेव राज जी ने एक-एक गुरू महिमा विषयक भजनों का गान किया। इसके उपरान्त अर्चन और प्रणाम करके श्रीमान जी ने अपना ब्यान किया। श्रीमान सरताज जी ने दो विशेष जीवन श्रद्धेय श्रीमान धर्मबल जी व श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के जीवनों के दृष्टान्त दिए। पुस्तकों से पाठ करके उनके जीवन की घटनाओं का ब्यान किया कि कैसे एक-एक मनुष्य जब अपनी मनमती चाल से चलता है तो जीवन की गति कैसे उल्ट होती है और जब देवात्मा की रोशनी मिलती है तो मनुष्य की दृष्टि सोच व गति कैसे सही राह पकड़ जाती है। यह श्रद्धेय श्रीमान धर्मबल जी की घटनओं से वर्णन किया फिर आगे उन्होंने पूजनीय देवात्मा के प्रति श्रद्धा, सन्मान से श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी ने कैसे-कैसे सेवा के तप खुशी-खुशी कमाएँ है, इसका भी सुन्दर ढंग से ब्यान किया। उन्होंने बताया कि वह स्वयं इन पुस्तकों का अध्ययन दिली भावों से करते रहे हैं। सभा के बाद धर्म सम्बन्धियों ने मन्दिर में चल रहे निर्माण कार्य का जायज़ा लिया।

-एक सेवक

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

मुझे तुफां ने घेरा है, मगर मैं कुछ कर नहीं सकता, मेरी हिम्मत सलामत है, तो फिर मैं बह नहीं सकता।

मुख़ाल्फत से मेरी शख़्सीयत निखरती है, मैं दुश्मनों का भी बड़ा एहतराम (सम्मान) करता हूं।

क्यों तैरने की चाहत लिए भी डूब जाते हैं लोग, डूब कर गहराई से, मैं उभर आता हूँ।

अहले हिम्मत ज़िद पे आ जाए अगर तो बदल देती हैं, वह हालात को, ऐसे सूरमों को कोई हरा नहीं सकता।

बन्दा परवर आप जी भरकर करें मुझ पर सितम पाए इस्तकलाल सब्र मेरा डगमगा नहीं सकता।

शाह राहे यूं ही भटक रहा था मुझे रास्ता दिखाया आपने, यह करम नहीं तो क्या है।

मैं सर झुकाता हूँ उन रहनुमाओं के आगे जिन्होंने पग पग मुझे सम्भाला है। उनकी इस कृपा को कभी भुला नहीं सकता शत: शत: प्रणाम है उनके आगे अपना सर उठा नहीं सकता।

मुख़ालफतें हज़ार आएं, मुझे हरा सकती नहीं। कभी मेरे पावों को डगमगा सकती नहीं।

निंदक निन्दा करते रहेंगे, परन्तु कारवां चलता रहेगा, भटकते हुए को रास्ता दिखाया आपने, यह करम (मेहरबानी) को भुला नहीं सकता।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :- श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154
+91 98769-59659

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री- Dev Samaj Global, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts